Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 09, Issue-I, May 2024

प्रमुख पुराणों में मंत्रद्रष्टा ऋषि: एक सामीक्षात्मक अध्ययन

(Mantradrashta Rishis in Major Puranas: An Analytical study)

Dr. Saroj Kumari[a,*]

[a]*Research Scholar, Sanskrit Department, Himanchal Pradesh University, Shimla (H.P.), India- 171005*

KEYWORDS

ब्रह्मा, मन्त्रद्रष्टा, सप्तर्षि, ऋषि, मनु, मन्वन्तर, चतुर्युग।

ABSTRACT

वैदिक काल से विचार की दो धारायें दृष्टिगोचर होती हैं- वेद धारा तथा पुराण धारा। वेद आरम्भ से ही धार्मिक हैं तथा यज्ञों में विशिष्ट देवता को उद्दिष्ट करके हविर्त्याग की विधि को महत्त्व देते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में वैदिक साहित्य, धर्म दर्शन और संस्कृति के सन्दर्भ में ऋषियों का विशेष योगदान रहा है। भारत को विश्वगुरु और भारतीय संस्कृति को विश्व की प्रथम संस्कृति बनाने में ऋषियों का ही योगदान रहा है। **सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा। शुक्लयजुर्वेद, 7.14** अर्थात् हमारी संस्कृति प्राचीनतम है। इस संस्कृति का संदेश हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा पूरे विश्व में दिया गया जिससे यह विश्व संस्कृति बनी। वास्तव में ऋषि ही ज्ञान-विज्ञान की सभी धाराओं के प्रवर्तक रहे हैं।

पुराणों का लक्ष्य लोकवृत्त का अनुशीलन तथा समीक्षा करके विपुल विवरण देना है। कल्प (युग) के आदि में सर्वप्रथम अनादि वैदिक शब्द राशि का प्रथम उपदेश ब्रह्माजी के हृदय में हुआ तथा ब्रह्माजी से ही परम्परागत अध्ययन-अध्यापन होता रहा जिसका निर्देशन वंश-ब्राह्मण आदि ग्रन्थों से प्राप्त होता है। अतः समस्त वेद की परम्परा के मूल पुरुष ब्रह्माजी हैं। इनका स्मरण परमेष्ठि प्रजापति ऋषि के रूप में किया गया है। प्रलयकाल में इनका स्वरूप बना रहता है। जब भगवान् विष्णु जी के नाभिकमल से पद्मोद्भव भगवान् ब्रह्मा आविर्भूत होते हैं, तब वे तप के द्वारा सृष्टि वर्धन कार्य में प्रवृत्त होते हैं।

मन्त्रद्रष्टा के रूप में अनेक ऋषियों ने योगदान दिया है जिन्होंने वेदमन्त्र को गहन तप तथा ध्यान के द्वारा प्राप्त किया है। वेदवाणी के सन्दर्भ में ऋषियों का मत है कि उन्होंने अपने ध्यान में सूक्ष्म ध्वनि को सुना जिसे ईश्वर वाणी भी कहा जाता है। इसी ध्वनि को ऋषियों ने सात छन्दों में, स्तुति रूप में प्रस्तुत किया तथा गुरु-शिष्य परम्परा से औरों तक पहुँचाया।[1]

महर्षि व्यास जी ने ऋग्वेद की शिक्षा पैल मुनि को, सामवेद की शिक्षा जैमिनि मुनि को, यजुर्वेद की शिक्षा वैशम्पायन मुनि को तथा अथर्ववेद की शिक्षा सुमन्तु मुनि को दी थी। इन ऋषियों ने अपनी-अपनी शाखाओं को और भी अनेक भागों में विभाजित कर दिया। इस प्रकार वेदों की शिष्य, प्रशिष्य परम्परा के द्वारा वेदों की अनेक शाखायें बन गयीं।[2]

मन्त्रों के पाठ से पूर्व मन्त्रों के ऋषि, देवता तथा छन्द का निर्देश होता है। मन्त्रों के द्वारा यज्ञ में जो देवताओं को बुलाता है, उसे ऋषि कहा गया है, जिसे बुलाया जाता है उसे देवता कहा जाता है तथा मन्त्रों के अक्षरों की निश्चित संख्या को छन्द कहा गया है।[3] अर्थात् मन्त्रों के आह्वान कर्ता को ऋषि कहा गया है। जिन्होंने ध्यान की अलौकिक अवस्था में मन्त्रों का दर्शन किया, उन्हें ऋषि कहा गया है।[4] निरुक्त के अनुसार यास्क ने ऋषि शब्द की व्युत्पत्ति की है जिसमें ऋषि को दर्शन करने वाला, तत्त्वों का साक्षात् अपरोक्ष अनुभूति रखने वाला कहा गया है।[5] अमरकोश के अनुसार ऋषि को सत्य वाचन करने वाला कहा गया है।[6] प्राचीन ऋषियों ने जिसकी स्तुति की थी (भृगु, अंगिरा आदि ऋषि) तथा आधुनिक ऋषियों (विश्वामित्र आदि) द्वारा भी जो स्तुति किया जाता है, वह अग्नि देवताओं को इस यज्ञ में बुलाये। अर्थात् ऋषियों को यहाँ पर यज्ञकर्त्ता भी कहा गया है।[7]

हलायुध कोश के अनुसार **ऋषति प्राप्नोति सर्वान् मन्त्रान् ज्ञानेन, पश्यति संसार पारं वा इति**।[8] वैदिक कोश के अनुसार ऋषि को द्रष्टा कहा गया है।[9] ऋषि को ब्राह्मणों में श्रेष्ठ माना गया है।[10] संस्कृत-हिन्दी-कोश के अनुसार ऋषि को मन्त्रद्रष्टा, पुण्यात्मा, मुनि, सन्यासी तथा विरक्त योगी कहा गया है।[11]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ऋषि साक्षात् धर्म करने वाले आप्त पुरुष कहे जाते हैं जो सब विद्याओं के यथावत् ज्ञाता हों। वे वेदमन्त्रों तथा उनके अर्थों को असमर्थ मनुष्य तक पहुँचाने से ऋषि कहलाते हैं।[12] ऋग्वेद के मण्डलों का संकलन ऋषियों की दृष्टि से ही किया गया था। प्रत्येक मण्डल का एक ऋषि है।[13] वैदिक ऋषियों में भारद्वाज को उच्च स्थान प्राप्त है। वे ऋग्वेद के छठे मण्डल के द्रष्टा कहे गये हैं।[14]

Corresponding author
***E-mail:** sarojkumarimphil@gmail.com (Dr. Saroj Kumari). https://orcid.org/0000-0002-6925-2770
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v9n1.04
Received 12th March 2024; Accepted 20th April 2024
Available online 30th May 2024
2456-0146 /© 2024 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

ऋग्वेद के अनुसार ऋषि कोई जाति विशेष नहीं है बल्कि कोई भी मनुष्य केवल अपने कर्मों तथा दीर्घ दृष्टि के द्वारा ऋषि हो सकता है।[15] अर्थात् यहाँ पर ऋषि शब्द का प्रयोग उन विद्वानों के लिये किया गया है जो तत्त्व का ज्ञान (ब्रह्म, आत्मा तथा सृष्टि से सम्बद्ध यथार्थ ज्ञान) रखते हैं।

वायु पुराण में ऋषि शब्द के अनेक अर्थ बतलाये गये हैं- गति, श्रुति, सत्य तथा तप।[16] अर्थात् ब्रह्मा जी द्वारा जिस व्यक्ति में ये चारों बातें नियत कर दी गयी हों, वही ऋषि कहलाता है। मत्स्य पुराण में ऋषि उसे कहा गया है जिसको ब्रह्मा से विद्या, सत्य, तप तथा शास्त्रादि के ज्ञान की सामूहिक प्राप्ति होती है।[17] यह अव्यक्त निवृत्ति के समय जब बल-बुद्धि से परमपद को प्राप्त कर लेता है, वह परमर्षि कहलाता है।[18] ब्रह्मा ने मन के द्वारा मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ की उत्पत्ति की। इनकी संख्या सात है, इसी कारण इन्हें सप्तर्षि[19] कहा गया है। इस सप्तर्षियों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे स्वायम्भुव नामक प्रथम मन्वन्तर के मन्त्रद्रष्टा ऋषि हैं।[20] ऋषियों के द्वारा भारतवर्ष में चार युग बतलाये गये हैं- कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग।[21] त्रेतायुग के आरम्भ में मनु और सप्तर्षिगण थे। ब्रह्मा की प्रेरणा से इन्होंने श्रौत और स्मार्त धर्मों का वर्णन किया था।

उत्तररामचरित के अनुसार श्री राम जी ने कहा था कि आद्य ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है, उनकी वाणी कभी व्यर्थ नहीं जाती है।[22] इस कथन से श्री राम की ऋषियों के प्रति गहरी श्रद्धा की अभिव्यक्ति प्रतीत होती है क्योंकि ऋषि सिद्धवाक् होते हैं। भागवत पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। उन्होंने मन तथा शरीर से सृष्टि रचना की। मन से सृष्टि करने के कारण मानसी सृष्टि कहा गया है।[23] वायु पुराण के अनुसार ब्रह्मा का नाम मन[24] भी है। प्रत्येक युग के अन्त में वेदों का लोप हो जाता है। उस समय सप्तर्षिगण स्वर्गलोक से पृथ्वी पर अवतीर्ण होकर वेदों का प्रचार करते हैं।[25] सत्युग के आरम्भ में स्मृति शास्त्र के रचयिता मनु का प्रादुर्भाव होता है। उस मन्वन्तर के अन्त तक तत्कालीन देवगण यज्ञ भोगों को भोगते हैं।[26] मनु के पुत्र एवं उनके वंशधर मन्वन्तर (प्रत्येक कल्प में मनु का काल) के अन्त तक पृथ्वी का पालन करते हैं। अतः मनु, सप्तर्षिगण, देवता, इन्द्र तथा मनुपुत्र राजागण- ये सभी मन्वन्तर के अधिकारी होते हैं।[27] चौदह मन्वन्तरों के बीत जाने पर एक हजार युग रहने वाला कल्प (युग) समाप्त हो जाता है।[28] एक हजार युग के बराबर ही रात्रि होती है उस समय ब्रह्मरूपधारी श्री विष्णु जी प्रलयकालीन एकार्णव (जलराशि) की शेष-शय्या पर शयन करते हैं।[29] तब आदि कर्ता सर्वव्यापक सर्वभूत भगवान् जनार्दन सम्पूर्ण त्रिलोकी को ग्रास बनाकर अपनी माया में स्थित रहते हैं।[30] उसके बाद फिर से कल्प के आदि में अव्ययात्मा भगवान् जागृत होकर रजोगुण का आश्रय लेकर सृष्टि रचना करते हैं। मनु, मनुपुत्र, राजागण, इन्द्र, देवता तथा सप्तर्षि ये सभी जगत् का पालन करने वाले भगवान् के ही सात्त्विक अंश हैं।[31]

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि ऋषि अर्थात् द्रष्टा। भारतीय परम्परा में श्रुति ग्रन्थों को यथावत समझाने वाले जनों को ऋषि कहा गया है। वे विशिष्ट जन जिन्होंने अपनी विलक्षण एकाग्रता के बल पर गहन ध्यान द्वारा विलक्षण शब्दों का दर्शन किया तथा उनके गूढ़ अर्थों को जानकार प्राणीमात्र के कल्याण के लिये उनको लिखकर प्रस्तुत किया जिसके कारण उन्हें **ऋषयो मन्त्र द्रष्टार: न तु कर्तार:** कहा गया है इसलिये किसी भी मन्त्र की स्तुति से पूर्व उसका विनियोग अवश्य किया जाता है। सनातन धर्म में ब्रह्माजी को सृजन का देवता कहा गया है उन्होंने मन से जिन ऋषियों की सृष्टि की वे उनके मानस पुत्र कहलाये तथा इन्हीं को प्रजापति भी कहते हैं। ऋषियों द्वारा प्रस्तुत साहित्य को आर्षेय कहा गया। वास्तव में कलियुग में न तो ऋषि होते हैं और न ही श्रुतियों का साक्षात्कार होता है, न ही स्मृतियों की रचना होती है। केवल इस युग में अनुवाद तथा टीकायें ही सम्भव हैं।

सन्दर्भ सूची

1. यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम।
   तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते॥ ऋग्वेद, 10.71.3
2. तत्रर्ग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः।
   वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत॥
   अथर्वाङ्गिरसामासीत्सुमन्तुर्दारुणो मुनिः॥ भागवत पुराण, 1.4.21-22
3. यस्य वाक्यं स ऋषिः।
   या तेनोच्यते सा देवता।
   यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः॥ ऋग्वेद-सर्वानुक्रमणी, 2.4
4. ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः। अष्टाध्यायी, 4.1.114
5. ऋषिदर्शनात् स्तोमान ददर्शेत्यौपमन्यव। निरुक्त, 2.3.11
6. ऋषयः सत्यवचसः। अमरकोश, द्वितीय काण्ड, ब्रह्मवर्ग, श्लोक 43
7. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
   स देवाँ एह वक्षति॥ ऋक्-सूक्त-संग्रह, प्रथम मण्डल, अग्नि सूक्त, मन्त्र 2
8. हलायुध कोश, पृष्ठ 186
9. वैदिक कोश, पृष्ठ 71
10. कवीनामृषिर्विप्राणा महिषो मृगाणाम्। ऋग्वेद, 9.96.6
11. संस्कृत-हिन्दी-कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ 224
12. यतः साक्षात्कृतधर्माणो धार्मिका आप्ताः, यै सर्वाविद्या यथावत् विदिता।
    येऽवरेभ्यो ह्यासाक्षात्कृतवेदेभ्यो मनुष्येभ्य उपदेशेन
    वेदमन्त्रान् मन्त्रार्थांश्च सम्प्रादुः प्रकाशितवन्तस्तस्मात्ते ऋषयो जाताः। ऋग्वेद
    भाष्यभूमिका, पृष्ठ 23, निरुक्त भाष्य, 1.20
13. ऋक्-सूक्त संग्रह, भूमिका भाग, पृष्ठ 11
14. ऋग्वेद, 6.765 मन्त्र
15. विप्रा ऋषयो नृचक्षसो। ऋग्वेद, 3.53.10
16. ऋषित्येव गतौ धातुः श्रुतौ सत्ये तपस्यथ।
    एतत् संनियतस्तस्मिन् ब्रह्मणा स ऋषि स्मृतः॥ वायु पुराण, 59.79
17. ऋषिहिंसागतौ धातुर्विद्या सत्यं तपः श्रुतम्।
    एष संचियो यस्मात् ब्रह्मणस्तु ततस्त्वृषिः॥ मत्स्य पुराण, 145.81
18. निवृत्तिसमकालाच्च बुद्धयाव्यक्त ऋषिस्त्वयम्।
    ऋषते परमं यस्मात् परमर्षिस्ततः स्मृतः॥ वही, 145.82
19. मरीचिरत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः।
    वशिष्ठश्च महातेजा ऋषयः सप्त कीर्तिताः॥ गरुड़ पुराण, 87.2

20. चत्वारि भारतवर्षे युगानि ऋषयोऽब्रुवन् ।
कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चैव चतुर्युगम् ॥ मत्स्य पुराण, 142.17
21. अथ त्रेतायुगस्यादौ मनु सप्तर्षयश्च ये ।
श्रौतस्मार्तं ब्रुवन् धर्मं ब्रह्मणा तु प्रचोदिताः ॥ वही, 142,40
22. ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति । उत्तररामचरित, 1.10
23. मनसो देहतश्चेदं जज्ञे विश्वकृतो जगत् ॥ भागवत पुराण, 3.12.27
24. मनो महांश्चमतिर्ब्रह्मा: ॥ वायु पुराण, 4.27
25. चतुर्युगान्ते वेदानां जायते किल विप्लवः ।
प्रवर्तयन्ति तानेत्यं भुवं सप्तर्षयो दिवः ॥ विष्णु पुराण, 3.2.46
26. कृते स्मृतेर्विप्र प्रणेता जायते मनुः ।
देवा यज्ञभुजस्ते तु यावन्मन्वन्तरं तु तत् ॥ वही, 3.2.47
27. भवन्ति ये मनोः पुत्रा यावन्मन्वन्तरं तु तैः ।
तदन्वयोद्भवैश्चैव तावद्भूः परिपाल्यते ॥
मनुस्सप्तर्षियो देवा भूपालाश्च मनो सुताः ।
मन्वन्तरे भवन्त्येतेशक्रश्चैवाधिकारिणः ॥ वही, 3.2.48-49
28. चतुर्दशाभिरेतैस्तु गतैमन्वन्तरैर्द्विज ।
सहस्रयुगपर्यन्तः कल्पो निश्शेष उच्यते ॥ वही, 3.2.50
29. तावत्प्रमाणा च निशा ततो भवति सत्तम ।
ब्रह्मरूपधरश्शते शेषाहावम्बुसम्प्लवे ॥ वही, 3.2.51
30. त्रैलोक्यमखिलं ग्रस्त्वा भगवानादिकृद्विभुः ।
स्वमायासंस्थितो विप्र सर्वभूतो जनार्दनः ॥ वही, 3.2.52
31. ततः प्रबुद्धौ भगवान् यथा पूर्वं तथा पुनः ।
सृष्टिं करोत्यव्ययात्मा कल्पे कल्पे रजोगुणः ॥
मनवो भूभुजस्सेन्द्रा देवास्सप्तर्षयस्तथा ।
सात्त्विकोंऽशः स्थितिकरो जगतो द्विजसत्तम् ॥ वही, 3.2.53-54

****